International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 7.150, Volume 06, No. 04(II), October - December, 2024, pp. 64-68

वैदिक साहित्य में गो का महत्व

अमित कुमार चंदेल*

प्रस्तावना

वैदिक काल में आर्थिक विकास की दृष्टि से पशुपालन को सर्वोपरि स्थान दिया गया है। वेदों में अनेक स्थानों पर गृहस्थ में अभीष्ट ऐश्वर्य के लिए अभ्यर्थना करते हुए पशुओं एवं गौओं के लिए प्रार्थना की गई है कि मेरे घर में पशु बहकर आयें अर्थात् पशु इतने अंधिक हो कि आते ही चले जायें, ये पशु निरोग हो – श्इमं गोष्ठं पशवः संस्रवन्तु। 1.वैदिक गृहस्थ के जीवन में गो पालन का बहुत अधिक महत्त्व है। गो की व्युत्पत्ति गम् धातु से मानी गई है–गच्छत्यनेन गम करणे। वैदिक कोश निघण्टु में गौ के पर्यायवाची शब्दों में अघ्न्या, अहि और अदिति का भी समावेश है। यास्काचार्य इनकी व्याख्या करते हुए कहते हैं कि अध्या अर्थात् जिसे कभी मारना नहीं चाहिये, अहि अर्थात् जिसका कदापि वध नहीं होना चाहिये, अदिति अर्थात् जिसके खंड नहीं करने चाहिये। प्रायः वेदों में गाय इन्हीं नामों से पुकारी गई है। वेदों में गाय को अघ्न्या कहा गया है। अर्थात् वह अहिंसनीय है, वध न किये जाने योग्य, हनन न करने योग्य है। वेदों में पशुओं की हत्या का विरोध तो है ही बल्कि गौ हत्या पर तो तीव्र आपत्ति करते हुए उसे जो न करने योग्य हो माना गया है। यजुर्वेद में गाय को जीवन दायिनी पोषण दाता मानते हुए गौ हत्या को वर्जित किया गया है। मानव जाति के लिये गौ से बढ़कर उपकार करने वाली कोई वस्तु नहीं है। गौ मानव जाति के लिये माता के समान उपकार करने वाली, दीर्घायु करने वाली और निरोगता देने वाली है। यह अनेक प्रकार से प्राणी मात्र की सेवा कर उन्हें सुख पहुँचाती है। इसके उपकार से मनुष्य कभी उऋण नहीं हो सकता। यही कारण है हिन्दु जाति ने गाय को देवता और माता के सदृश समझकर उसकी सेवा सुश्रुषा करना अपना धर्म समझा। गो से मानव जाति का जीवन पालित एवं पोषित होता है। हमारे देश में दूध की समस्या से निजात दिलाने में गो का महत्त्वपूर्ण योगदान है। गो सोम के गुणों से युक्त मधुर दूध अपने अन्दर रखती है।

गाय के दूध से हमारी खाद्य पुष्टि तो होती है साथ ही अरोग्यता की व्यापक रूप में पूर्ति भी होती है। वेद वाक्यों से स्पष्ट होता है कि श्आयुवैधृतम्श श्तेजो वै धृतम्श श्पयोऽमृतम्श अर्थात् घृत हमारे जीवन में आयु का प्रदाता है, तेज प्रदान करता है और दूध अमृत है। ऋग्वेद के एक मंत्र में गाय को दुग्ध रूप अमृत का केन्द्र कहा गया है। शरीर को स्वस्थ रखने के लिये भोजन में प्रोटीन होना बहुत जरूरी है। प्रोटीन का एक मुख्य स्रोत है मांस। गाय अपने दूध द्वारा प्रचुर मात्रा में प्रोटीन देकर हम पर अनुग्रह करती है। ताकि हम बिना मांस के भी काम चला सके।

गोषु प्रियम् अमृतं रक्षमाणा' (ऋग 1/71/6)

दूध, दही, और घी का उपयोग करने वालों के लिये मांस खाने की जरूरत नहीं है। अथर्ववेद के एक मंत्र में मांस का निषेध तथा गाय के दूध के ग्रहण की बात की गई है।

* सहायक आचार्य, शहीद रूपाजी कृपाजी राजकीय महाविद्यालय, बेगू, चित्तौड़गढ़, राजस्थान।

इममूर्णायुं वरुणस्य नाभिं त्वचं पशूनां द्विपदां चतुष्पदाम् । त्वष्टुं प्रजानां प्रथम जनित्रमग्ने मा हिंसीः परमे व्योमन् ॥ (यजुर्वेद अ० १२, मन्त्र ४०)

इन ऊन रूपी बालों वाले भेड़, बकरी, ऊंट आदि चौपाये, पक्षी आदि दो पग वालों को मत मार ।यदि नो गां हमि यद्यश्वं यदि पूरुषम् । तं त्वा सीसेन विध्यामो यथा नोऽसो अवीरहा ॥

महाभारत में मांस भक्षण निषेधसुरां मत्स्यान्मधु मांसमासवकृसरौदनम् ।

धूर्तैः प्रवर्तितं ह्येतन्नैतद् वेदेषु कल्पितम् ॥ (शान्तिपर्व २६५।६॥)

अहिंसा परमो धर्मः सर्वप्राणभृतां वरः । (आदिपर्व ११।१३) किसी भी प्राणी को न मारना ही परमधर्म है।

प्राणिनामवधस्तात सर्वज्यायान्मतो मम । अनृतं वा वदेद्वाचं न हिंस्यात्कथं च न ॥ (कर्णपर्व ६६।२३) मैं प्राणियों को न मारना ही सबसे उत्तम मानता हूँ । झूठ चाहे बोल दे, पर किसी की हिंसा न करे । यहाँ अहिंसा को सत्य से बढ़कर माना है । असत्य की अपेक्षा हिंसा से दूसरों को दुःख अधिक होता है क्योंकि सबको जीवन प्रिय है । इसीलिये यह महान् आश्चर्य है कि दृ जीवितुं यः स्वयं चेच्छेत् कथं सोऽन्यं प्रघातयेत् । यद्यदात्मनि चेच्छेत् तत्परस्यापि चिन्तयेत् ॥ (शान्तिपर्व २५६।२२॥) जो स्वयं जीने की इच्छा करता है, वह दूसरों को कैसे मारता है । प्राणी जैसा अपने लिये चाहता है, वैसा दूसरों के लिये भी वह चाहे । कोई मनुष्य यह नहीं चाहता कि कोई हिंसक पशु वा मनुष्य मुझे, मेरे बालबच्चों, इष्टमित्रों वा सगे सम्बन्धियों को किसी प्रकार का कष्ट दे वा हानि पहुंचाये अथवा प्राण ले लेवे, वा इनका मांस खाये । एक कसाई जो प्रतिदिन सैंकड़ों वा सहस्रों प्राणियों के गले पर खञ्जर चलाता है, आप उसको एक बहुत छोटी और बारीक सी सूई चुभोयें तो वह इसे कभी भी सहन नहीं करेगा । फिर अन्य प्राणियों की गर्दन काटने का अधिकार उसे कहां से मिल गया ? प्राणियों का हिंसक कसाई महापापी होता है । महाभारत में कहा है दृ घातकः खादको वापि तथा यश्चानुमन्यते । यावन्ति तस्य रोमाणि तावदु वर्षाणि मञ्जति ॥ (अनुशासनपर्व ६४।४॥) मारनेवाला, खानेवाला, सम्मति देनेवाला दृ ये सब उतने वर्ष दुःख में डूबे रहते हैं जितने कि मरने वाले पशु के रोम होते हैं । अर्थात् मांसाहारी घातकादि लोग बहुत जन्मों तक भयंकर दुःखों को भोगते रहते हैं । मनु महाराज के मतानुसार आठ कसाई इस महापातक के बदले दुःख भोगते हैं ।

ऋग्वेद के एक मंत्र में कहा गया है कि गाय अपने दूध में खाने वाली औषधीय जड़ी बूटियों के उपचारात्मक और रोग निरोधी प्रभाव प्रदान करती है। इस प्रकार गाय का दूध न केवल ईलाज के लिए बल्कि कई बीमारियों में निवारक के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है। गाय की प्रशंसा में अथर्ववेदश में कहा गया है– गावो भगो गाव इन्द्रो मे अर्थात् गायें ही भाग्य और गायें ही मेरा ऐश्वर्य है। गायें कृश को हष्ट–पुष्ट बनाती है और सभाओं में उसका गुणगान होता है। वैदिक ऋषियों ने गौ को माता के तुल्य कहा है– श्गावो विश्वस्य मातरःश मानव जीवन एवं पर्यावरण के लिए उपयोगी होने के कारण वेदों में गौ को भगवती कहा है तथा इसकी प्राप्ति की प्रार्थना भी की गई है।

यज्ञ में गाय के घी को सर्वोपरि माना गया है – आज्य– होमेषु सर्वेषु गव्यमेव भवेद् घृतम्। गाय के घी के अभाव में भैंस, बकरी, भेड़ का घी, तथा उसके भी अभाव में तिल का तेल भी ग्राह्य है।'

पर्यावरण शोधन की दृष्टि से गाय का घी ही सर्वोत्तम है, यह बात विदेशी विद्वान् भी मानते हैं। अंग्रेजी की एक पत्रिका में लिखा है कि चावल और गाय के शुद्ध घी की अग्नि में आहुति देने से चार प्रकार का रासायनिक धुआं उत्पन्न होता है, गाय के घी द्वारा हवन से अस्टीलिन नामक पदार्थ वायुमण्डल को शुद्ध करता है। गाय का घी दुर्गन्ध को नष्ट करता है।[६] इसीलिए हमारी संस्कृति में गौ पालन संवर्धन की प्रधानता दी गई है।

अथर्ववेद में गौपालन के सम्बन्ध में अनेक निर्देश प्राप्त होते हैं। गौओं का स्थान ऐसा होना चाहिए जिसमें गौएं सुखपूर्वक बैठ सकें और रह सकें। वह स्थान गौ के लिए हर दृष्टि से शिव अर्थात् कल्याणकारी होना चाहिए और उसमें पुष्टि दायक खान–पान आदि का पूरा प्रबन्ध होना चाहिए।[६] इससे संकेतित होता है कि ऐसा प्रबन्ध होना चाहिए कि हमारी गौओं को कहीं किसी तरह का भी डर न हो। हमें अपनी गौओं को हमेशा नीरोग रखना चाहिए, रोगी गौओं का दूध नहीं पीना चाहिए।

एक मन्त्र में कहा गया है कि अपने धन के द्वारा खूब खिलापिलाकर अपनी गौओं को पुष्ट करना चाहिए जिससे उनकी संख्या हमारे घर में बढ़ सकें। वेदों में देवों से हजारों गौ माँगने के उल्लेख भी मिलते हैं।

ऋगवेद में गाय को श्अघन्याश या श्जो मारने योग्य नहीं हैं अर्थात जिसे मरना नहीं चाहिए के रूप में संदर्भित है।

ऋगवेद में गाय को रुद्रों की मां, वसुस की बेटी, आदित्य की बहन और अमृत के केंद्र के रूप में संबोधित कर वर्णन किया गया है।

भारतीय संस्कृति में गाय को माता की उपमा की गई है। गाय के दूध, गोबर, मूत्र आदि के कई उपयोग हैं। वेदों में कृषि भूमि को उपजाऊ बनाने व फसलों के विकास में गो के गोबर व मूत्र का बहुत बड़ा योगदान था। वेद में गोबर को फल आदान करने वाला कहा गया है– करीषिणी फलवतीं।[७] गोबर को धन के रूप में स्वीकार किया गया है– गोमय वसु। गो वंश की सहायता से किसानों द्वारा खेत को बार–बार जोतने का उल्लेख मिलता है– गोविर्यवं न चकृषत्।[८] गो की सहायता से उत्पन्न अन्न उत्तम होता है अतः उसे महान् श्अन्नश महामिषम कहा गया।[९] अतः कृषि कार्य में गो वंश की उपयोगिता के कारण आर्यों ने पशुओं में गो का महत्त्वपूर्ण स्थान माना है।

मृत दुधारु गाय के सींग को साफ कर सीगों में ताजा गोबर भरकर उसे सीलबंद कर छह माह के लिए जमीन में दबा देते हैं। यह कार्य कार्तिक मास सितम्बर व अक्टूबर में चंद्र के दक्षिणायण में करना चाहिए। गाय के सींग में ब्रह्माण्डीय शक्तियों को ग्रहण करने की अद्भुत क्षमता होती है। मार्च अप्रैल के कृष्ण पक्ष में इनको जमीन से निकालते हैं। सींगों से तैयार खाद को निकालकर मिट्टी के बर्तन में एकत्र करके ठण्डे स्थान पर रख देते हैं। तैयार खाद दुर्गध मुक्त होती है।

गाय के सींग से बनी खाद को उपयोग में लेने के लिये गाय के एक सींग से प्राप्त 30 से 35 ग्राम खद को 15 लीटर पानी में डाल कर एक से डेढ़ घंटे तक दोनों ओर घुमाना होगा। इससे खाद्य पानी में घुल जायेगी। इसी के घोल को खेत में झाड़ू या विना नोजल के स्पेयर से बुबाई से पहले सांयकाल के समय छिड़काव करें। यह खाद एक एकड भूमि के लिए पर्याप्त है। इस घोल का प्रयोग वर्ष में 3–4 बार करते हैं।वैदिक काल में गो रंग–बिरंगी थी। श्वेत गाय को कर्की कहा जाता था, उसके बछड़े की रक्षा करने का प्रसंग उपलब्ध है– कर्की वत्समिह रक्ष वाजिन।[१०] प्रथम बार दुही जाने वाली तथा अमृत के समान दूध देने वाली गाय को गृष्टि कहा जाता था। दूध देने वाली दुग्धा गाय को धेनु कहा जाता था। बांझ गाय को वशा तथा बच्चा देकर बांझ होने वाली गाय को सूत वशा कहा गया है। पशुओं के निवास स्थान को गोष्ठ कहा जाता था। जहां गायें सर्दी, गर्मी, वर्षा से संरक्षण पाती थी।

गौमूत्र से होने वाले फायदे.

- आयुर्वेद के अनुसार, गौमूत्र विष नाशक, जीवाणु नाशक और जल्द ही पचने वाला होता है। इसमें नाइट्रोजन, कॉपर, फॉस्फेट, यूरिक एसिड, पोटैशियम, यूरिक एसिड, क्लोराइड और सोडियम पाया जाता है।
- गौमूत्र दर्दनिवारक, पेट के रोग, स्किन प्रॉब्लम , श्वास रोग (दमा), आंतों से जुड़ी बीमारियां, पीलिया, आंखों से संबंधित बीमारियां, अतिसार (दस्त) आदि के उपचार के लिये प्रयोग किया जाता है।

- आयुर्वेद के अनुसार, शरीर में तीनों दोषों की गड़बड़ी की वजह से बीमारियां फैलती हैं, लेकिन गौमूत्र पीने से बीमारियां दूर हो जाती हैं।
- दिमागी टेंशन की वजह से नर्वस सिस्टम पर बुरा असर पड़ता है। लेकिन गौमूत्र पीने से दिमाग और दिल दोनों को ही ताकत मिलती है और उन्हें किसी भी किस्म की कोई बीमारी नहीं होती।
- शरीर में पाए जाने वाले विभिन्न विषैले पदार्थों को बाहर निकालने के लिए गौमूत्र पीना बहुत लाभदायक है।
- शारीरिक कमजोरी और मोटापा दूर करने के लिए भी गौमूत्र का सेवन लाभकारी होता है।

वैदिक काल में गायों के पहचान के लिए कानों पर किसी धार्मिक भावना से प्रेरित होकर सम्भवतः चिह्न बनाया जाता था। यह चिह्न सम्भवतः आग में जलाकर लाल किए हुए चाकू से दोनों कानों पर बनाया जाता था, जिसे अश्विनी कुमार सन्तान वृद्धि के लिए बनाते थे। ऋग्वेद में दृष्टिगत होता है कि गाय के कान पर चिह्न बनाने के लिए तांबे की शलाका से दो अंक या दो लकीर बनाते थे। इससे गाय की प्रसव की योग्यता और दुग्ध में वृद्धि होती है।

पशुओं की संरक्षा के लिए देव प्रार्थनाएं की जाती थी। एक सूक्त में अरुन्धती नामक औषधी से रूद्र के पाश से उत्पन्न रोग की शान्ति के लिए प्रार्थना की गई है। इस प्रार्थना से गायें रोग मुक्त होकर अधिक दूध देने वाली लगती थी। जो गायें बछड़े को दूध नहीं पिलाती थी उसे अभिचार के द्वारा बछड़े से युक्त किया जाता था।[8] इससे स्पष्ट होता है कि तत्कालीन भिषक् लोग पशु चिकित्सा भी करते थे। गायें अपनी उपादेयता के कारण और उनमें मनुष्यों की दैवी आस्था के कारण अवध्य समझी जाती थी।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि वैदिक काल में आर्थिक दृष्टि से पशुपालन का अत्याधिक महत्त्व था। पशुओं में भी गाय को सर्वोपरि माना जाता था। गाय के प्रति आर्यों में दैवी आस्था थी, ऐसी आस्था श्रृद्धालु भारतीयों में आज भी देखने को मिलती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अथर्ववेद 2.26.24
2. बहद् संस्कृत–हिन्दी शब्दकोश
3. ऋग्वेद 1.164.27
4. अघ्न्या (यजुर्वेद (1.1)
5. वेद में मानववाद
6. ऋग्वेद 8.101.15
7. अधर्ववेद 19.31.5
8. ऋग्वेद 10.73.9
9. अथर्ववेद 4.21.5
10. अर्ववेद 4.21.6
11. ऋग्वेद 1.164.40
12. यज्ञमीमांसा
13. अग्निहोत्रं
14. अथर्ववेद 3.14.1,5,6
15. अविभ्युषी । अवर्ववेद 3.14.3

16. अनमीवा। अवर्ववेद 3.14.3
17. अथर्ववेद 19.31.3
18. ऋग्वेद 10.62.3
19. ऋग्वेद 1.23.15
20. रायस्पोषेण बहुला भवन्ती। अथर्ववेद 3.14.6
21. राजस्थान पत्रिका पृ. 15, 22.10.2015
22. अथर्ववेद 4.38.6
23. केवलीन्द्राय दुदुहे हि गृष्टिर्वशं पीयूषं प्रयमं दुहाना। अयर्वविद 8.9.24
24. ऋग्वेद 6.45.26, 8.34. 14, 8.51.2
25. ऋग्वेद 4.32.7
26. यज्ञं दुहानं सदमित् प्रपीनं पुमांसं धेनुं सदन रयीणाम्। अयर्ववेद 11.1.34
27. त्रीणि वै वशाजातानि विलिप्ती सूतवशा वशा। अर्थवेद 12.4.47
28. आ गावो....सीदन्तु गोष्ठे अथर्ववेद 4.21.1
29. लोहितेन स्वधितिना मिथुनं कर्णयोः कृधि। अकर्तामश्विना लक्ष्म तदस्तु प्रजया बहु। वही 6. 141.2
30. ऋग्वेद 10.62.7
31. अथर्ववेद 2.26, 3.14

❖◆❖